This question paper contains 4 printed pages.

Your Roll No. .....

Sl. No. of Ques. Paper	: **2406**
Unique Paper Code	: **62051312**
Name of Paper	: **HINDI - A**
Name of Course	: **B.A. (Prog.) CBCS**
Semester	: **IV**
Duration	: **3 hours**
Maximum Marks	: **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

***सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।*

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग कीजिए:

(क) किन्तु अदालत में पहुँचने की देर थी। पंडित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील-मुख्तार उनके आज्ञापालक और अरदली, चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना मोल के गुलाम थे। उनके देखते ही लोग चारों तरफ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया बल्कि इसलिए कि वह कानून के पंजे में कैसे आए। ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करने वाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए।

अथवा

उसने तो अपने किये का फल पा लिया, पर मैं समस्या का

Scanned with CamScanner

समाधान नहीं पा सकी। इस बार की असफलता ने तो बस मुझे रुला ही दिया। अब तो इतनी हिम्मत भी नहीं रही कि एक बार फिर मध्यम वर्ग में अपना नेता उत्पन्न करके फिर से प्रयास करती। इन दो हत्याओं के भार से ही मेरी गर्दन टूटी जा रही थी, और हत्या का पाप ढोने की न इच्छा थी, न शक्ति ही। और अपने सारे अहं को तिलांजलि देकर बहुत ही ईमानदारी से मैं कहती हूँ कि मेरा रोम-रोम महसूस कर रहा था कि कवि भरी सभा में शान के साथ जो नहला फटकार गया था, उस पर इक्का तो क्या, मैं दुग्गी भी न मार सकी। मैं हार गयी, बुरी तरह हार गयी।

(ख) दुःख के वर्ग में जो स्थान भय का है, वही स्थान आनंद-वर्ग में उत्साह का है। भय में हम प्रस्तुत कठिन स्थिति के नियम से विशेष रूप में दुखी और कभी-कभी उस स्थिति से अपने को दूर रखने के लिये प्रयत्नवान भी होते हैं। उत्साह में हम आने वाली कठिन स्थिति के भीतर साहस के अवसर के निश्चय द्वारा प्रस्तुत कर्म-सुख की उमंग से अवश्य प्रयत्नवान होते हैं। उत्साह में कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ-साथ कर्म में प्रवृत्ति होने के आनंद का योग रहता है। साहस पूर्ण आनंद की उमंग का नाम उत्साह है। कर्म-सौन्दर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं।

अथवा

अभिषेक की बात चली, मन में अभिषेक हो गया और मन में राज के साथ राम का मुकुट प्रतिष्ठित हो गया। मन में प्रतिष्ठित हुआ, इसलिये राम ने राजकीय वेश उतारा,

Scanned with CamScanner

राजकीय रथ से उतरे, राजकीय भोग का परिहार किया, पर मुकुट तो लोगों के मन में था, कौशल्या के मातृ-स्नेह में था, वह कैसे उतरता, वह मस्तक पर विराजमान रहा और राम भीगे तो भीगे, मुकुट न भीगने पाये, इसकी चिंता बनी रही। 10×2

2. हिंदी कहानी के विकास पर प्रकाश डालिए।

अथवा

हिंदी निबंध के विकासक्रम को स्पष्ट कीजिए। 12

3. कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'पुरस्कार' कहानी की समीक्षा कीजिए।

अथवा

"'मलबे का मालिक' कहानी में विभाजन की त्रासदी को व्यक्त किया गया है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए। 12

4. 'उत्साह' निबंध का सार लिखिए।

अथवा

निबंध की कसौटी के आधार पर 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' की समीक्षा कीजिए। 12

5. 'अंधेर-नगरी' में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'घीसा' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। 12

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए:

Scanned with CamScanner

(क) नयी कहानी

(ख) नाटककार जयशंकर प्रसाद। 7

Scanned with CamScanner